सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल। (LEFI,Chennai)

मई-जून, 2002

अपनी निगाह में छोटा दिखना।

पराजित करना - परमेश्वर की सहायता द्वारा।

उत्पत्ति(१:१-२) 'आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। पृथ्वी बेडौल और वीरान थी, और अथाह जल की सतह पर अन्धियारा था, और परमेश्वर का आत्मा जल की सतह पर मण्डराता था।'

और धरती बैडोल और वीरान थी, परमेश्वर का आत्मा जल की सतह पर मंडराता था। जब धरती बैडोल और वीरान थी तो परमेश्वर का आत्मा उसे आकार दे सका, सुंदरता तथा पूर्णता दे सका। परमेश्वर ने निर्देश दिया कि धरती बन जाए। वह ठीक किस प्रकार बनी, हमें इसका ज्ञान नहीं है। परन्तु परमेश्वर ने कहा और वह पूरा हुआ।

प्रभु यीशु से मिलने के पहले, व्यक्ति सोचता है कि वह बड़ा व्यक्ति है और वह और अधिक बड़ा बनना चाहता है। परमेश्वर वीराने मे आया। जब तक की व्यक्ति अपनी निगाह में नगण्य नहीं बन जाता और अपने हृदय में यह नहीं जान लेता कि वह आत्मिक रूप से बैडोल है, परमेश्वर उसके हृदय में कार्य नहीं कर सकता। तुम्हें यह ज़रूर जान लेना चाहिए कि तुम नगण्य और निकम्मे हो। प्रार्थना तुम्हें यह ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करती है।

यीशु के पास आना और जान लेना कि हम कुछ भी नहीं, एक अच्छी बात है। एक व्यक्ति जो

....अपनी निगाह में छोटा...पृष्ठ ३ पर

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

१ शमूएल(३०-६) 'इसके अतिरिक्त दाऊद अत्यन्त संकट में पड़ गया था क्योंकि लोग अपने पुत्र-पुत्रियों के कारण हृदय में कड़ुवाहट से भर गये थे। और उसका पथराव करने की बात कर रहे थे, परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा में साहस प्राप्त किया।'

निश्चय ही एक दुखदायी स्थिति पैदा हो गई थी। दाऊद इस्राएल में सुरक्षित नहीं था क्योंकि राजा शाऊल उसके प्रति कड़वाहट से भरा शिकारी की भाँति उस स्थान के चारों ओर उसे खोज रहा था। इस कारण दाऊद ने फिलीस्तीनियों के राज्य में जाकर शरण ली और उनके राजा किश ने, उसे रहने के लिए सिकलग नामक शहर दे दिया।

जैसे ही दाऊद और उसके आदमियों ने अपनी पत्नियों के साथ सिकलग शहर में अपना घर बसाया, अमालेकियों ने सिकलग पर आक्रमण किया और उनकी पत्नियों और बच्चों को बन्दी बना कर ले गए। जब दाऊद सिकलग वापस पहुँचा तो उसने शहर को तबाह हुआ पाया और जो कुछ उसके आदमियों का था, अमालेकी उसे उठा कर ले गए थे।

अमालेकियों द्वारा लाई गई तबाही का दाऊद के कुछ आदमियों पर इतना बुरा असर पड़ा कि उनमें से कुछ दाऊद को पत्थरों से मार-मार कर उसकी हत्या करना चाहते थे। वास्तव में, वह अंधकार की घड़ी थी। जब लोगों के घरों पर हमला हो और उनके बच्चे बन्दी बना लिये जाएँ तो उनका मनोबल टूट जाता है। हर तरफ से दाऊद पर आक्रमण हो रहा था, ऐसा प्रतीत होता है कि उसके विश्वस्त भी उसके विरूद्ध हो गए थे, दाऊद परमेश्वर की शरण में पहुँचा। ऐसी घड़ी में जब अधिकतर लोग हड़बड़ा उठते हैं और मन मार कर बैठ जाते हैं, दाऊद ने अपने प्रभु परमेश्वर का सहारा लेते हुए ढाढ़स बाँधा।

ऐसा धर्म जो किसी मनुष्य की परीक्षा और मुश्किल की घड़ी में सहारा न बने, वह धर्म ही नहीं है। वह तो केवल पारिवारिक रीति रिवाज़ या सनक है, वह तो केवल अंधविश्वास है या अपने पूर्वजों के विश्वास की ओर भावुक रियायत है। लेकिन संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वह धर्म व्यर्थ है। लेकिन उसका धर्म जो उद्धारकर्ता की खोज अपने पापों की क्षमा पाने के लिए और अपने आत्मा की मुक्ति के लिए करता है वह सत्य धर्म है।

जब हम यह कहते हैं कि 'दाऊद ने अपने आप को परमेश्वर में संभाला' इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम सबकुछ छोड़ कर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाएँ और परिस्थिति को यूं ही बदलने दें। जो कोई जब जीवित परमेश्वर को जानता है, उसे परमेश्वर की ओर से भरपूर अनुग्रह और सामर्थ उपलब्ध होती है कि वह अपनी हानि की पूरती कर सके।

विश्वास और कुछ नहीं, बल्कि परमेश्वर के कहे अनुसार कदम उठाना। विश्वास कदापि गतिहीन नहीं होता। इस बात में काई संदेह नहीं कि विश्वास के मार्ग में पहला कदम अपने को स्थिर करना है, ताकि परमेश्वर तुम से बात कर सके। बहुत ही कम लोग इस स्थिरता को सीखते हैं। जब तुम्हारे अपने ही विचार और अपनी योजनाएँ और तुम्हारे चारों ओर के कोलाहल को दूर कर दिया जाए, तब परमेश्वर अपनी इच्छा तुम्हें प्रकट करना आरंभ करते हैं। 'शांत हो जाओ और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ, पृथ्वी पर मैं ही महान ठहरूंगा।' भजन संहिता(४६:१०) इसके बाद दाऊद ने परमेश्वर की इच्छा जाननी चाही। १ शमूएल(३०:८) 'फिर दाऊद ने यहोवा से पूछा, 'क्या मैं इस दल का पीछा करूँ?' और उसने उससे कहा, पीछा कर , क्योंकि

पराजित करना...पृष्ठ २

पराजित करना...पृष्ठ १ से

तू उन्हें निश्चय जा पकड़ेगा, और तू सबको निःसंदेह छुड़ा लेगा।'

और दाऊद निर्देश पालन करते हुए अमालेकियों का पीछा करने को निकल पड़ा। परमेश्वर ने उसे संपूर्ण विजय दी। जो सब कुछ अमालेकी लूट ले गए थे, उसने उनसे वापस छीन लिया। जब हम परमेश्वर के आत्मा अनुसार चलते हैं, तो हमें हर स्थिति में पूर्ण विजय हासिल होती है। हमें अपने मार्ग में रूकावट या अड़चनें देख कर हतोत्साहित नहीं होना चाहिए, हमें जीवित परमेश्वर में अपना ढाढ़स बाँधना चाहिए जो हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता है।

न्यूयार्क शहर के वर्लड ट्रेड सेंटर की दोहरी इमारतों पर आक्रमण होने के पश्चात, आज हम पहले से कहीं अधिक निराशा के आंकड़ो से घिरे हैं, विचलित करने वाले पूर्वानुमान, युद्ध की आशंका और हर प्रकार की खबर से। जबकि बड़े-बड़े व्यापार गिर रहे हैं और बेरोज़गारों की कतार बढ़ रही है। छोटे घरों में इसके दबाव को महसूस किया जा रहा है। अपने बच्चों को भूखा देखने का दर्द भरा दृश्य माता-पिता को सहना पड़ रहा है। ज्ञानी पुकारते हैं, 'हमें नहीं मालूम, हम किस दिशा में बह रहे हैं।' वास्तव में यह अंधकार की घड़ी है। लेकिन उनके लिए जो प्रभु यीशु को जानते है, यह अंधकार की घड़ी - रोशनी की घड़ी में, विश्वास और प्रबल प्रार्थना के द्वारा बदल सकती है। प्रभु हमें किसी भी असंभव दिखने वाली परिस्थिति मे से निकाल सकता है। इसलिए हमारे चारों ओर चाहे कुछ भी क्यों न हो रहा हो, हमें इस धुंधलाहट को जो ये खबर सुनाने वाले माध्यम बता रहे हैं, अपने उपर नहीं टिकने देना चाहिए।

एक भाई जिसके घर में चोरों ने सेंध लगाई थी, मुझे इस प्रकार बता रहा था, 'मैं इस बात पर सोच रहा था कि इस घटना द्वारा, जिसमें घर की इतनी सारी चीज़ें चोरी हो गई थीं, जो दैनिक प्रयोग में थीं, प्रभु मुझे क्या सीखाना चाह रहा है?' इस भाई ने हमेशा अपनी कमाई का दसवाँ भाग परमेश्वर को समर्पित किया था और यह हानि बड़ी अजीब और अकथनीय लग रही थी। एक दिन पुलिस वालों ने आकर उसे बताया, 'श्रीमान, चोर पकड़ा गया है और आपकी सारी चोरी हुई चीज़ें बरामद कर ली गई हैं। यह हमारे लिए अश्चर्य की बात है कि सारी चुराई हुई वस्तुएँ हमने बरामद की, अधिकत्तर सारी चीज़ें वापस नहीं मिलती।'

.....पराजित करना...पृष्ठ ३ पर

डेविड ब्रेनर्ड - आत्माओं के लिए आत्मिक द्वंद में तड़पन।

डेविड ब्रेनर्ड ने पवित्र एंव प्रार्थनामय जीवन बिताया। उसकी दैनिंदनी उपवास, मनन और एकाकी समय से भरी थी। वह कई घंटे व्यक्तिगत प्रार्थना में व्यतीत करता था। वह प्रार्थना थी जिसने उसके जीवन की सेवकाई को अद्‌भुत सामर्थ दी।

'जब मैं घर वापस आता हूँ।' उसने कहा, 'और अपने को मनन, प्रार्थना और उपवास में लगाता हूँ, तो मेरा आत्मा आत्मसंतापन, स्वार्थत्याग, दीनता और सांसारिक बातों के मोह को दूर करना चाहता है। मेरा इस धरती से कोई और संबंध नहीं, केवल यह कि यहाँ पर वफादारी से परमेश्वर की दी हुई सेवाकाई पूरी करूँ। मैं एक मिनट भी धरती द्वारा प्रदान की हुई चीजों के लिए नहीं जीना चाहता।

'परमेश्वर की उपस्थिति की मिठास को कुछ अनुभव करते हुए और उसके विवश करने वाले प्रेम का जोर, जो कितने प्रशंसनीय रूप से हमारे आत्मा को लुभाता है और हमारी सारी इच्छाओं और आकांक्षाओं को परमेश्वर पर केंद्रित करता है। मैं यह दिन गुप्त उपवास एँव प्रार्थना के लिए अलग रखता हूँ कि उसका निर्देश और आशीष उस महान काम के लिए जो मेरे सामने है - सुसमाचार का प्रचार। और यह माँगता हूँ कि प्रभु मेरे पास वापस आए और अपने मुख का तेज मेरे ऊपर चमकाए।

'दोपहर से पहले मुझ में बहुत ही कम सामर्थ थी। दोपहर में, परमेश्वर ने मेरी सहायता की कि मैं अपने मित्रों के लिए आत्मिक द्वंद में लग जाऊँ। लेकिन रात्रि में प्रभु ने मुझे प्रार्थना में अपनी अद्‌भुत उपस्थिति दी। मेरे विचार से कभी पहले मैं इतनी अधिक आत्मिक वेदना में नहीं रहा। मैंने कोई रूकावट महसूस नहीं की, क्योंकि दिव्य अनुग्रह का भण्डार मेरे लिए खोल दिया गया था। मैं वहाँ अनुपस्थित मित्रों के लिए, आत्माओं(लोगों) को इक्ठ्ठा करने के लिए, अनगिनत ज़रूरतमंद आत्माओं(लोगों), जिन्हें मैंने परमेश्वर के जन माना हैं, जो दूरस्थ स्थानों पर हैं, के लिए और बहुतों के लिए आत्मिक द्वंद में लगा हुआ था। सूर्य निकलने के आधे घंटे से लेकर अंधेरा होने तक मैं इतनी वेदना में था कि मैं पसीने से तरबतर था, फिर भी मुझे यह लगता था कि मैंने कुछ भी नहीं किया। ओह, मेरे उद्धारकर्ता(यीशु मसीह) ने तो पसीने को लहू की तरह दीन आत्माओं के लिए बहाया था। उनके प्रति और अधिक करूणा पैदा होने की मैंने अभिलाषा की। मैं फिर भी शांति की मनोदशा में था, दिव्य प्रेम की अनुभूति और अनुग्रह के साथ मैं ऐसी मनोदशा में अपने बिस्तर पर लेटा, अपने मन को परमेश्वर पर लगाए।'

सामर्थी प्रार्थना के लोग पराक्रमी आत्मिक लोग बनते हैं। प्रार्थना कभी नहीं मरती। ब्रेनर्ड का सारा जीवन, प्रार्थनामय जीवन था। दिन-रात उसने प्रार्थना की। प्रचार से पहले और प्रचार के बाद, उसने प्रार्थना की। अनन्त जंगल से गुजरते एकाकी में उसने प्रार्थना की। अपने घास के बिस्तरे पर प्रार्थना करना। गहरे जंगल में जाकर अकेले प्रार्थना। घण्टे पर घण्टे, दिन-प्रतिदिन, जल्द सवेरे, देर रात, वह प्रार्थना उपवास कर अपनी आत्मा को विनती में परमेश्वर के सम्मुख उड़ेल रहा था। वह प्रार्थना में सामर्थ से साथ परमेश्वर के निकट था। परमेश्वर सामर्थी रूप से उसके साथ थे और इस कारण वह जो मृत होकर भी बोलता है और एक उदाहरण है। जो समय के अंत तक बोलता रहेगा।

जोनाथन एडवर्ड, डेविड ब्रेनर्ड के विषय में कहता है, 'ब्रेनर्ड का जीवन परमेश्वर की सेवकाई में सफलता का राज दिखाता है। उसने जीत की खोज वैसे की जैसे कोई सिपाही घेरेबंदी या युद्ध में जीतने की कोशिश करता है या वैसे जैसे एक आदमी दौड़ में महान पुरूस्कार पाने के लिए करता है। मसीह और लोगों के लिए जीवित प्रेम, कैसे उसने लोगों की सेवा की? हमेशा उत्साह से, न केवल बोल में और शिक्षा में, सार्वजनिक या व्यक्तिगत रूप से, लेकिन दिन-रात प्रार्थना से, परमेश्वर के साथ विनती में और न बोल सकने वाली कराहट और वेदना के द्वारा कि लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकें। जब तक उन लोगों के हृदय में मसीह न बस गया, जिनके पास उसे भेजा गया था। याकूब के सच्चे बेटे की भाँति सारी रात दृढ़ता से द्वंद में सुबह होने तक लगा रहा।'

- चुना हुआ।

पराजित करना...पृष्ठ २ से

हाँलाकि एक मसीह यह जानता है कि किस तरह से वह अपनी वस्तुओं और धन को दूसरों के साथ बाँटे। लेकिन मैं यह नही मानता कि उसे अकारण बहुत हानि पहुँचे। हमें स्वंय से यह प्रश्न करना चाहिए, 'इस अनुभव के द्वारा प्रभु मुझे क्या सिखाना चाह रहा है?' जब हमने अपना पाठ सीख लिया, तब प्रभु हमें पूरी विजय दिलाएगा। भजन संहिता(१:३) 'वह उस वृक्ष के समान है जो जल-धाराओं के किनारे लगाया गया है और अपनी ऋतु में फलता है और जिसके पत्ते कभी मुर्झाते नहीं, इसलिए जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफल होता है।'

जब हम नम्रता से परमेश्वर की आज्ञा अनुसार चलते हैं, तब हमारे हाथों द्वारा किये गए कामों पर महान आशीष आती है। यह आशीष परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए है। इन अतिरिक्त आशीषों को हमें इस प्रकार नहीं समझना चाहिए कि वे केवल हमारे लिए ही हैं। सच तो यह है कि वे सुसमाचार के बढ़ावे के लिए हैं।

जब जोन वैसली न्यू कास्ल गया, जो कुछ उसने वहाँ देखा तो वह देखकर उसे गहरा धक्का लगा, उसने इस प्रकार लिखा, 'इतना अधिक पियक्कड़पन, गाली बकना और बुरी बातें बकना, यहाँ तक कि छोटे बच्चों के मुँह से भी, जो मुझे याद नहीं कि थोड़े समय में मैंने पहले कभी देखी या सुनी हैं।' जोन वैसली ने इस दुर्भाग्यपूर्ण दृश्य पर यह निष्कर्ष निकाला, 'वास्तव में यह स्थान प्रभु के लिए तैयार है।' जोकि धर्मियों को नहीं बल्कि पापियों को पश्चाताप की ओर लाने आया था।' तो उसने वहाँ प्रचार किया। पहले तो लोग उसे देखने के लिए आए और बाद में एक महान संजीवन आया।

परमेश्वर हमारी कई सभाओं में संजीवन दे रहा है। यह संजीवन की घड़ी है। यह घड़ी शैतान के राज्य पर बेधड़क आक्रमण करने की घड़ी है। एक मसीह आलसी बन भाग्य पर भरोसा करने वाला व्यक्ति नहीं हो सकता। संजीवन तो कलिसिया को याद करना, कलिसिया को पश्चाताप करना, कलिसिया को पुनः मार्ग पर चलना है। प्रकाशित वाक्य - (२:५)'और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य साक्षी, मृतकों सें से जी उठनेवालों में पहिलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का शासक है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। जो हम से प्रेम रखता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया। 'आइये हम अपना साहस प्रभु में बढ़ाएँ और निर्भीक होकर आगे बढ़ें।

- जोशुआ दानियल।

अपनी निगाह में छोटा...पृष्ठ १ से

प्रार्थना करता है शीघ्र ही जान लेता है कि वह अपनी सामर्थ से कुछ नहीं कर सकता। यीशु उस स्थिति में पहुँचे थे, 'मैं अपने से कुछ भी नहीं कर सकता, मैं जैसा सुनता हूँ, न्याय करता हूँ और मेरा न्याय सच्चा है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं पूरी करता, परन्तु पिता की इच्छा जिन्होंने मुझे भेजा है। ' यूहन्ना(५:३०) तुम स्वंय से कुछ नहीं कर सकते।

प्रार्थना हमें परमेश्वर के सामने नगण्य बनना सिखाती है। मूसा ने कहा, 'मैं कौन हूँ कि तुम मुझे फिरौन (मिस्र का राजा) के पास भेजो?' यदि तुम यह सोचो कि तुम परमेश्वर के लिए कुछ कर सकते हो तो परमेश्वर तुम्हारा उपयोग नहीं कर सकते। २ कुरन्थियों(५:७) 'क्योंकि हम रूप देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।' नयी सृष्टि बनना, जो बैडोल और वीरान थी। एक सच्चा मसीह अपने जीवन में ऐसे मोड़ पर पहुँचता है और कहता है। प्रभु मैं अज्ञानी हूँ, और मैं कुछ भी अपनी सामर्थ से नहीं कर सकता। जो कुछ भी मैंने तेरे लिए करने का यत्न किया है वह कुछ भी नहीं है।

एक धर्मी स्त्री, जो परमेश्वर की सेवा में लगी थी, ऐसे प्रार्थना कर रही थी कि परमेश्वर उसका उपयोग करें। दर्शन में उसने एक सफेद हाथ को गंदा चीथड़ा पकड़े हुए देखा और आवाज़ आई, 'तुम्हारे सारे सुकर्म इस गंदे चीथड़ों के समान है। तुम्हारी धार्मिकता और तुम्हारी की गई सेवा गंदे चीथड़ों के समान है।' यदि तुम इस सत्य से परिचित हो तो परमेश्वर तुम्हें लेकर उपयोग कर सकेंगें। परमेश्वर उस समय आये जब सब कुछ बैडोल था और उन्होंने सृष्टि की रचना की। उन्होंने मनुष्य को अपने प्रतिबिम्ब में बनाया। वह मनुष्य को परमेश्वर के गुण देना चाहते हैं। संसार को अभी भी ऐसे मनुष्य को देखना बाकि है जिसकी आत्मिक शक्ति महान हो।

हम शोक-संतप्त मसीह के कहलाते हैं, जिस शरीर ने घाव सहे, जिसके पैरों और हाथों को छेदा गया था। क्रूस हमें यह अनुभव करवा देगा कि हम कुछ नहीं हैं। जब हम प्रार्थना में लगे रहते हैं हम अपनी ही निगाह में छोटे बनते चले जाते हैं और यीशु महान ही महान बनते चले जाते हैं जब तक वे सारी सृष्टि को न भर दें। वह (यीशु) कहते हैं, 'मैं तुम में और तुम मुझ में।' वह तुम्हारे अंदर वास कर सकते हैं क्योंकि वह तुम्हारे लिए टूटे हैं। वह 'नगण्य' जो तुम हो, वह उस(परमेश्वर) में, जो सब कुछ है, एक हो जाएगा। लोग तुममें मसीह देखेंगें। तुम्हारा स्पर्श, बोल और जीवन मसीह की भाँति होगा। वीराने में परमेश्वर ने आगमन किया और संसार की सृष्टि की। उस संसार से अच्छा मनुष्य है जिसकी उसने सृष्टि की। परमेश्वर के समक्ष प्रार्थना हमें 'नगण्य' बनाती है। इस 'नगण्य' में परमेश्वर आते हैं और एक नया जीवन देते हैं जो यीशु मसीह स्वरूप है।

- एन दानियल (स्वर्गीय)

Free On-Line
subscription
Would you like an On-Line subscription to the ***"मृत्युंजय ख्रिस्त"?***
Please visit our web site at:
http://lefi.org

सत्य की परख!

१ पतरस(५:६) 'इसलिए परमेश्वर के सामर्थी हाथ के नीचे दीन बनो, जिससे कि वह तुम्हें उचित समय पर उन्नत करे।'

पृष्ठ ३

देना ही जीवन है।

एक व्यक्ति अमरीका के पश्चिमी भाग में एक बंजर भाग से गुज़र रहा था और प्यास के मारे मरने पर था। अप्रत्याशित रूप से उसे मार्ग में एक त्यागी हुई झोंपड़ी मिली, जिसमें एक हैण्डपम्प लगा था। पम्प के नीचे किसी ने पानी से भरे कस कर ढके हुए जग को छोड़ा हुआ था, उसके साथ एक काग़ज़ के पुर्ज़े पर कुछ लिखा हुआ था। उस कागज़ के टुकड़े पर लिखा था, 'इस जग के पानी को मत पीना। इसे हैंडपम्प में डालकर उसे तैयार करना और इस जग को भर कर अगले व्यक्ति के लिए छोड़ देना।'

यह व्यक्ति हिचकिचाया। वह बहुत प्यासा था और किसी करणवश यदि यह कूँआ सूख गया हो तो यह उसके जीवन के बचने की आखिरी आशा भी जाती रहेगी। अंत में उसने एक बार कोशिश करने का निर्णय लिया। धीरे-धीरे उसने पम्प में पानी डाल कर हैण्डल को चलाना आरंभ किया। जैसे ही पानी का आखिरी भाग अंदर पहुँचा, पम्प में जान आ गई और तेजी से ताजा पानी ऊपर आया। जब वह व्यक्ति वहाँ से चलने लगा, उसने उस जग को पानी से पूरा भरा और वह कागज़ के टुकड़े पर लिखे संदेश को छोड़ा। लेकिन उसने उसमें अपने शब्द जोड़े, 'एक बार आज़माओ, मैंने इसे आज़माया है और इसे सच पाया।' सुलेमान ने भी समझ का वही मोती दिखाया है, यदि तुम कूएँ से पानी पीना चाहते हो तो पहले पम्प में पानी डालकर तैयार करो। यह अनुछेद तो बोने, लगाने, देने और परमेश्वर में विश्वास करने के विषय में है कि वह तुम्हें इसका फल देगा, यदि जल्दी नहीं तो किसी दिन ज़रूर। तुर्की में एक ऐसी ही कहावत है, 'नेकी कर और पानी में डाल। यदि मछली इसे नहीं जानती तो क्या हुआ, परमेश्वर तो इसे जानता है।' इसका यह भावार्थ है कि 'देना ही जीवन है' - ऐसे जीना जिससे परमेश्वर का आदर हो। यहाँ यह दिखाया गया है कि कैसे क्या किया जाए।

अपनी रोटी को पानी पर डालने कि यह योजना नहीं कि उसके बदले तुम क्या पा सकते हो। अनेक बार परमेश्वर के वचन(बाइबल) में प्रभु यह प्रतिज्ञा करता है कि जब हम दूसरों को देंगे तो उसके बदले वह हमें आशीष देगा। लेकिन हम क्यों दें यह उतना ही आवश्यक है जितना कि हम क्या दें और अधिकतर ऐसा ही होता है।

हम इस कारण नहीं देते कि हमें उसके बदले में क्या वापस मिले। लूका(६:३८)'दिया करो तो तुम्हें भी दिया जाएगा। वे तुम्हारी गोद में पूरा-पूरा नापकर, दबा-दबाकर हिला-हिलाकर उभरता हुआ डालेंगे। क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों के लिए नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा। 'यह एक आशीष की प्रतिज्ञा है न कि दान का उद्देश्य। हम बदले में पाने के लिए नहीं देते। हम दान करते हैं क्योंकि यह अच्छा है। जब हम अपनी जिम्मेवारी मान कर देते हैं तो परमेश्वर हमारे ऊपर बहुतायत से आशीष बरसाता है। 'दान' शब्द बाइबल में १००० बार से अधिक आता है। यह सत्य है कि दान परमेश्वर की निगाह में महत्वपूर्ण है।

'मनुष्य अपने मुंह के फल के कारण भली वस्तुओं का आनन्द उठाता है, परन्तु विश्वासघाती का आनन्द तो हिंसा में ही होता है।' नीतिवचन(१३:२) यह चेतावनी देता है। दूसरे शब्दों में, जिस व्यक्ति की नज़र पाने पर लगी रहती है अन्त में उसके पास कुछ नहीं रहेगा। जबकि जिसके जीवन में दान करना मुख्य भाग है वह बहुतायत से पाएगा। बाइबल कहता है कि जब हम दान करते हैं, परमेश्वर हमें धनवान बनाएगा, परन्तु यह ऐसे माध्यमों से हमें मिल सकता है, जो हम सपने में भी नहीं सोचेगें।

१७वीं शताब्दी में एक जर्मनी का जाना-माना प्रचारक जिसका नाम अगस्तस फ्रेंके था, उसने एक अनाथालय की स्थापना की और वहाँ बेघर बच्चों को, जो हार्ले, जर्मनी की गलियों में भटक रहे थे, लेकर आया। एक दिन वह पैसे की तंगहाली में अपना काम जारी रखे था, एक अभागी मसीह विधवा उसके द्वार पर पैसे की भीख माँगने आई। वह केवल एक सोने का सिक्का चाहती थी। अपनी तंगहाली के कारण न चाहते हुए भी उसे इंकार करना पड़ा। उसके पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं था। निराश होकर वह स्त्री वहाँ बैठ कर रोने लगी। उसके आंसू देखकर फ्रेंके का दिल भर आया और उसने कहा, 'एक मिनट रुको, मुझे अंदर जाकर प्रभु से इस बारे में बात करने दो।' वह अनाथालय के अंदर घुसा और अपने दफ्तर का दरवाज़ा बंद कर परमेश्वर से मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करने लगा। जैसे ही उसने प्रार्थना की, उसने अनुभव किया कि परमेश्वर का आत्मा उसे यह निर्देश दे रहा है कि वह अपना बचा हुआ एकमात्र सिक्का उस विधवा को दे दे। अपनी ज़रूरतें पूरी होने के लिए उसने परमेश्वर पर भरोसा करते हुए, वह सोने का आखिरी सिक्का दे दिया। उसने वापस पाने की कोई इच्छा नहीं रखी था, उसने केवल वही किया जो सही था।

दो दिनों के बाद इसने उस विधवा से एक गर्मजोश चिठ्ठी प्राप्त की। उसने यह लिखा था कि उसकी उदारता के कारण उसने परमेश्वर से यह प्रार्थना की कि उसके अनाथालय पर भेंटों की बारिश कर दे। उसी दिन उसने एक अमीर स्त्री से १२ सोने के सिक्के प्राप्त किये और स्वीडन देश में एक मित्र से दो सिक्के। उसने सोचा कि उस स्त्री पर किये पुण्य के काम के बदले उसने अत्यधिक आशीष प्राप्त कर ली है। लेकिन कुछ समय पश्चात उसे यह सूचना मिली कि राजकुमार लुडविग वान वरटनबर्ग का देहान्त हो गया है और उन्होंने अपनी वसीयत में यह निर्देश दिया था कि सोने ५०० सिक्के अनाथालय को दिये जाँए।

यही स्वभाव परमेश्वर अपने लोगों में देखना चाहते हैं। वह चाहते है कि हम पानी पर रोटी बिखेरें और बिना फल की चाह किये दूसरों को दान दें। वह ज्ञान का मोती हमें सिखाता है कि हम सही कार्य करें और बाकी परमेश्वर को सौंप दें। मुझे पूरा विश्वास है कि अगस्त फ्रेंके कहेगा, 'कोशिश करके देखो। यह मेरे लिए सच्चा साबित हुआ है।' अधिकतर लोग दान अपनी आमदनी के अनुसार करते हैं। यदि यह प्रक्रिया उलटी कर दी जाए और सबका पालनहार यदि हमारे दान के अनुसार हमारी आमदनी कर दे तो हम में से कई बहुत गरीब हो जाऐंगें।

परमेश्वर ने हमें दो हाथ दिये हैं, एक से लेना और दूसरे से देना। हम लोग जमाखोरी की टंकी नहीं हैं, हम तो देने का माध्यम हैं। यदि हम यह परमेश्वर द्वारा सौंपी गई जिम्मेवारी और विशेषाधिकार को पूरा करने में असफल होते हैं, तो हमने सच्ची मसीहत का अर्थ खो दिया है।

सारा जो मैंने रखा, मैंने खो दिया।
सारा जो मैंने खर्चा, मेरा था।
सारा जो मैंने दान दिया, वह मेरा है।
- चुना हुआ।

पृष्ठ ४

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।